



रासायनिक घोल के छिड़काव एवं पानी डालने के पश्चात् गोबर खाद का छिड़काव



रासायनिक घोल एवं गोबर खाद के छिड़काव के बाद थाले में पुनः पानी भरने का कार्य

परिणाम/निष्कर्ष

उपचार पश्चात् वृक्ष में फूल के गुच्छे बढ़ जाते हैं एवं प्रत्येक गुच्छे में फूल की संख्या दो गुनी देखने को मिली है। सामान्यतया अनुपचारित वृक्ष में औसतन प्रत्येक गुच्छे में 22 से 25 फूल लगते हैं जबकि उपचारित वृक्ष में प्रत्येक गुच्छे में 50 से 55 फूल लगे पाये गये हैं।

लागत एवं लाभान्सा (प्रति वृक्ष- रूपये में)

❖ लागत	-	150 - 200
❖ आय	-	700 - 750
❖ अनुपचारित वृक्ष से आय	-	150 - 200
❖ कुल लाभान्सा	-	400 - 350

क्र.	रासायन का नाम	मात्रा (ग्राम)	अनुमानित दर (रु)
1	सोडियम नाईट्रेट	250	80-90
2	पोटेशियम क्लोराईड	250	60-65
3	म्यूरैट ऑफ पोटाश	250	4-5
4	गोबर खाद	20किग्रा	8-10

क्रमांक 1 एवं 2 के रासायन कम्पनी के अधिकृत विक्रेता से ही खरीदें एवं क्रमांक 3 म्यूरैट ऑफ पोटाश को खुले बाजार से भी प्राप्त किया जा सकता है। सड़ी गोबर खाद दुग्ध डेयरी अथवा ग्रामों के कृषक से भी प्राप्त की जा सकती है।

संपर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वैज्ञानिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान,
जबलपुर (म.प्र.)

फोन: (0761) 2666529, 2665540

© संचालक, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर म.प्र.। "प्रकाशन की इस तकनीक का कोई भी भाग किसी भी रूप में संचालक, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर की पूर्व अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकेगा। यह संस्थान का एकाधिकार होगा।"

महुआ (मधुका लेटीफोलिया)

रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से महुआ फूल एवं फल की उत्पादकता में वृद्धि



पुष्प गुच्छों से अच्छादित वृक्ष



बीज प्रौद्योगिकी प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से महुआ फूल एवं फल की उत्पादकता में वृद्धि

प्रस्तावना

महुआ वृक्ष गरीबों के वृक्ष के नाम से जाना जाता है। महुआ वृक्ष का प्रत्येक भाग अपनी उपयोगिता रखता है। इसकी पत्तियाँ पौष्टिक होने के कारण जानवरों के लिये चारे के काम आती हैं। इसमें अत्याधिक शर्करा, विटामिन, कैल्शियम एवं अन्य पोषक तत्व होने के कारण ग्रामीण इसे चावल एवं अन्य भोज्य पदार्थ के साथ खाने में उपयोग करते हैं। महुआ के बीज तेल प्राप्त करने का प्रमुख स्रोत हैं। इसके तेल को शुद्धिकरण के पश्चात् इसे खाने के रूप में, चाकलेट बनाने में, मोमबत्ती बनाने में, साबुन निर्माण में एवं सौन्दर्य प्रसाधन की सामग्री तैयार करने में उपयोग किया जाता है। महुआ के फूल एवं फल की उपयोगिता एवं आदिवासियों की इस लघु वनोपज पर निर्भरता को देखते हुये संस्थान द्वारा इसकी उत्पादकता में वृद्धि किये जाने हेतु कुछ प्रयास किये गये हैं। महुआ में सामान्यतः प्रति वृक्ष 35 से 50 किलो फूल का उत्पादन होता है परन्तु कुछ रासायनिक उर्वरकों के उपचार से इसके फल एवं फूल के उत्पादन में दो से तीन गुना तक वृद्धि देखी गई है जो कि सामाजिक आर्थिक एवं व्यवसायिक दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण हैं।

कार्य विधि

महुआ के वृक्ष में फूल एवं फल की उत्पादकता बढ़ाने के लिये सर्वप्रथम वृक्ष के चारों ओर छत्र के आधार पर 1/2 फीट खोदकर (प्लेट की तरह) थाला बनाते हैं। उसमें 250 ग्राम सोडियम नाइट्रेट 250 ग्राम पोटेशियम क्लोराइड 250 ग्राम म्युरेट ऑफ पोटाश लेकर एक बाल्टी में 20 लीटर पानी में घोलते हैं एवं बनाये गये थाले में छिड़काव करते हैं इसके बाद 15-20 बाल्टी पानी डालकर ऊपर से 20 किलो ग्राम गोबर खाद डालते हैं एवं थाले को अच्छी तरह 8 से 10 बाल्टी पानी से भर देते हैं। इसके पश्चात् पानी की उपलब्धतानुसार शुरु में 2 से 3 दिन के अंतराल पर 1 से 2 बार सिंचाई करने से परिणाम अच्छे मिलते हैं क्योंकि सिंचाई से उपचार में प्रयोग रासायन अच्छी तरह वृक्ष की जड़ों तक पहुँच जाते हैं तथा फूल एवं फल की उत्पादकता दो से तीन गुना अधिक प्राप्त होती है। वृक्षों में यह उपचार माह दिसंबर अथवा जनवरी के प्रथम सप्ताह में किया जाना चाहिये।

थाला निर्माण प्रक्रिया



प्रयोग में लिये जाने वाले रासायन

रासायनिक घोल तैयार करने की विधि



रासायनिक घोल का छिड़काव

रासायनिक घोल के छिड़काव के पश्चात् थाले में पानी भरने का कार्य

